Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

आशुतोष जी की कहानियों में शिल्प विधि

Mahipal*

M.Phil. in Hindi

सार – *आशुतोष हिन्दी कहानी के सुपरिचित किस्सागों हैं। इनकी कुछ कहानियों का तेलगु और अंग्रेजी में भी अनुवाद हो रहा है। खाप में इनकी कहानियों की किताब 'मरे तो उम्र भर के लिए' भारतीय ज्ञान पीठ नई दिल्ली से प्रकाशित है। इनकी कहानियों का एक अन्य संग्रह 'उम्र पैंतालीस बतलाई गई थी।' यथार्थ को दर्शाता एक दहकता दस्तावेज है। आशुतोष जी ने अपनी कहानियों में समय एवं स्थान के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। जिसके कारण इनकों कहानियों में सजिवता अपने आप आ जाती है। कहानियों में भाव समग्रता के साथ-साथ भाषा का इस ढ़ग से प्रयोग किया जाता है जिसके कारण पाठक की जिज्ञासा निरंतर बनी रहती है आशुतोष जी ने अपनी उकहानियों में आर्थिक भावों को व्यक्त करते हुए समाज का यथार्थ रूप पाठक के सामने रखा है। आशुतोष जी लेखन की हर कला में दक्ष हैं जैसे भावों की सबलता बनाए रखना पाठक के मन में जिज्ञासा बनाए रखना आदि।*

लेकिन इन्होने अपनी कहानियों में जिस शिल्प बिधि का प्रयोग किया है उस से मैं बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ हूँ। आशुतोष की शिल्प विधि पर प्रकाश डालने से पहले हमें शिल्प के बारे में जान लेना अत्यन्त आवश्यक है।

----------X----------

शिल्प विधि से तात्पर्य किसी वस्तु के निर्माण की पद्धति से है इसलिए निर्माण के लिए जितने ढंग या तरिके अपनाए जायेगें, उन्हे वस्तु की शिल्प विधि कहा जायगा। शिल्प विधि के स्वरूप के संबंध में अनेक तरह की व्याख्याएं प्रस्तुत की गई है। 'जनेन्द्र' टैकनींक के ठांचें के नियमों का नाम देते हैं तथा साहित्य सृज्न के लिए इसका योग स्वीकार करते है। इसका अभिप्राय पर हुआ कि शिल्प विधि का संबंध रचाना के बाह्य पक्ष से अधिक है तथा इससे रचना निर्माण में सहायता मिलती है। शिल्प विधि के संबंध में अनेक समीक्षकों ने अनेक तरह की व्याख्या प्रस्तुत है जो रचना के आन्तरिक एंव बाह्य पक्ष से संबंध रखती है।

अतः शिल्प विधि के दो स्वरूप है:-

क. शिल्पविधि का आन्तरिक स्वरूप

ख. शिल्पविधि का बाह्य स्वरूप

शिल्प विधि के आन्तरिक स्वरूप का संबंध रचना में घटित होने वाली रचनाकार की उन मनः स्थितियों से है जिनके परिपे्रक्ष्य में वह शिल्प विधि का अन्वेंषण करता है। रचनाकार अपनी आन्तरिक आवस्त्त के अनुकुल शिल्प विधि का निर्माण करता है ताकि वह अपनी अनुभूतियों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सके।

शिल्प विधि का बाह्य स्वरूप:-

शिल्प विधि का बाह्य स्वरूप वह है जब रचनाकार की अनुभूति शब्द बद्ध होकर पाठक के सामने आ जाती है। यह शिल्प विधि का मूर्त एवं साकार रूप होता है। यथा आशुतोष जी ने अपनी कहानियों में जिस शिल्प विधि का उपयोग किया है उसका हम इस प्रकार समझ सकते हैं। सपाटताः सपाटता से अभिप्राय शिल्प की सहजता, सरलता और सादगी से है। ऐसी कहानी में रचनाकार शिल्प के प्रति जागरूक नहीं रहता है अपितु तथ्य को सपार रूप में प्रस्तुत करता है। आशुतोष का यह शिल्प कहानी 'यही ठइया नथिया हेरानी' में सपार ढंग से पुस्तुत है। "एक थी बेला फुआ एक रहे हम और एक खूब बड़ा सा गाँव बेला फआ की आदत बहुत थी उन्हें जो भी चीज अच्छी लगती तो उसे उसे राजेश खन्ना जैसी बताती थी' इन पक्तियों में आशुतोष ने भाष का सहज और स्पष्ट, सरक प्रयोग किया है तथा किसी प्रकार की भाष काग कपेर नहीं है।

आशुतोष जी ने अपनी कहानियों में समग्र प्रतीक विधा ज्यादा अपनाया है। समग्र कहानी को संवेदना उसी पर आकर सिमट गई है इनकी कहानी 'उनके पर जाने और ये आसमाँ जाने' में कालेज और कस्बे बदहवास समय था। कस्बे के कालेज में विकास सर को नयी-नयी नौकरी लगी थी कॉलेज

www.ignited.in

और कस्बे का चरित्र एक जैसा था। दोनों अनमने थे दोनों जैसे आधी नींद में रहते थे इस प्रकार कॉलेज और कस्बे को आज भी जनता का प्रतीक दिखाया गया है जो हाल कहानी में कस्बे और कॉलेज का वही हाल आज से युवा का है। अनमना सा और सोया हुआ इस प्रकार आशुतोष जी ने समग प्रतीक का योजना का प्रयोग किया है। आशुतोष ने सांकेतिकता का प्रयोग भी अपनी शिल्प विधि में किया है। सांकेतिकता में व्यंग्य छिपा रहता है सांकेतिकता के कारण कहानी अर्थ पूर्ण व प्रभावशाली हो जाती है। आशुतोष के द्वारा लिखी गई कहानी 'घड़े का दुख' तो साकेंतिकता और त्यंग्य से भरी पड़ी है यथा 'घड़ा खरीदने की अनुमती पाकर छोटा कार्यलय बन्द हो गया। सबसे बड़े बाबू की अगुआई में पूरा कार्यालय घडे खरीदने बुढ़िया के पास गए भले उस समय घडे की कोई जरूरत नहीं थी' इन पंक्तियों में आशुतोष ने कार्यालय के बाबू लोग जो अपने कर्तत्य से विमुख हो गए थे। उनकी मूर्खता की और संकेत किया है।

मुहावरे व लोकोक्तियाँ

अपनी बात कहने के लिए आशुतोष ने मुहावरों और लोकोक्तियों का यथास्थान प्रयोग किया हैं। परिणाम स्वरूप भाष अर्थगर्भित हो गई है। इस से भाषा ने कम शब्दों में अधिक कहने की शक्ति पा ली है। आशुतोष ने लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा कैसी धार दार और गम्भीर बनती है उदाहरणः 'चचरे भाई ने भाभी ने शुरू के दिनों में बेला फुआ को धोडी ढील दे दी, उसी के साहरे पहले वे धीरे-धेरे बेलगाम हुई बाद में एकदम छुटटा हो गई' मुहावरे लोकोक्तियों के प्रयोग के बावजूद आशुतोष की भाषा सरल है कहीं भी कलिष्टता नहीं इन्होंने अपनी कहानियों में कलम तोड दी बिना पानी दिये कोसना तथा पहाड सरकाना आदि मुहावरों का सुन्दर व सटीक प्रयोग किया है।

आशुतोष जी ने अपने कथन को पाठक तक पहचाने के लिए जिस भी बोली या भाष का प्रयोग करना पडा उसका किया लेकिन अपने भाव को पाठक तक पहूँचाने में कामयाब रहे। जिसमें बिहारी हिन्दी के शब्दों का प्रयोग भी किया जैसे 'वाह का बात करते हो एकदम राजेश खन्ना जइसन' क्यो ना पसन्न किया.... का कभी थी हमार मै'

काव्यत्मयकता न आशुतोष ने अपनी कहानियों मै सरल और संवेदनशील भाषा में यथा समय-स्थिति के अनुकूल कई स्थलों पर काव्यात्मकता भाष का प्रयोग किया है एसे स्थलों में गदयाश में भी काव्य रसोभास होता है। जैसेः

यही ठइयाँ नथिया हो गया

कोसो में पूछँ .....

सांस से पूछूँ ननदिया से पूछूँ,

देवर से पूछत ल जानी हो रामा .....

यह ठइयाँ नथिया हेरानी .....

इसी कड़ी में देखे बाल्मीकि थोडी देर तक उनको जाते हुए देखता रहा। उसके भीतर से खुशी का एक रेला उमडा और गले से छिरक पड़ाः-

मटिया में पुतरी

सरगवा से उतरी

पुतरी तोह को ले के ना

छवायेक डिहवा पर एक हो गडई

पुतरी तोहके के ले का ना .....

कहानी में यथा-स्थान आवश्यकता अनुसार आशुतोंष जी ने अपनी काव्यशैली का प्रयोग किया है। जो कहानी में जिज्ञासा को बढता है।

प्रस्तुतीकरण की शैली:-

प्रस्तुतीकरण की शैली की दृष्टि से भी आशुतोष की कहानियों में वैविध्य एवं सशक्ता पाई जाती है। इन्होने अपनी कहानियों मैं पत्रात्मक शैली, व्यंग्यात्मक और चित्रांत्मक आदि शैयिों का कथनानुसार प्रयोग किया है। उदहारण के लिए पत्रात्मक शैली की ये पक्ंितयां देखे:- कार्यालीन रीप और आज्ञाएँ

कृपया संज्ञान के के आपके कार्यालय के उपयोग के लिए चाहे छडे की खरीदी का प्रकरण से खास कार्यालय को कोई आपत्ति नहीं किन्तु छडे की खरीद के लिए शासनादेश संख्या कुछ नहीं होगा सरकारी समान खरीदी के लिए जारी दिशानिर्देश के अनुसार सामान का टेडेर निकाल कर ही खरीदी जाावे पत्रात्मक शैली का उदहारण देखे मेरी आँखों के सामने लडकी के पिता को पगडी पहन कर के ख्याल साब लाल स्कार्फ वाला वह लडकी लाल जोडे में यहाँ तक चार माह वाला मेरा दोस्त आसमानी शेरवानी में दूल्हा बन कर बैठा मुस्करा रहा था। इस प्रकार हम पाते है की आशुतोष जी ने

www.ignited.in

प्रस्तुतीकरण शैलियों को पाठक के सामने रोचक ढंग से प्रयोग किया है।

निष्कर्ष:-

इस प्रकार आशुतोष जी ने अपनी कहानियों को पाठक के सामने प्रस्तुत करने के लिए आवश्यकतानुसार सभी शैलियों का योजना पूर्ण ढंग से प्रयोग किया है और पाठक के हृदय पर एक अमिट छाप छोडने में कामयाब रहे हैं। शिल्प को दृष्टि से आशुतोष बडे ही कलात्मक कथाकार हैं। वे शिल्प के हर पहलु को बारिकी से कहानियों में उपयोग करतें हैं।

संदर्भ सूची:-

1. डॉ. नगेन्द्रः भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका पृ. 31
2. आशेतोष उम्र पैंतालीस बतलाई गई थी कहानी ठइयाँ नथिया हेरानी..... पृ. 27
3. आशुतोष उम्र पैंतालीस ..... कहानी घडे का दूख पृ. 96
4. वही उम्र पैंतालीस कहानी पघे ठइयों नथिया हेरानी पृ. 47
5. वही वही कहानी धडे का दूखः पृ. 88
6. आशुतोष कहानी संग्रह वही कहानी आखरी कसम पृ. 80

Corresponding Author

Mahipal*

M.Phil. in Hindi

mahinirmal109@gmail.com